आय एस एस एन –2277- 8721
जानेवारी – फेबुवारी 2024

इलेक्ट्रॉनिक इंटरनॅशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल

Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Peer Reviewed Refereed Journal

खड –13 , अंक – 1 (विशेष अंक -1)

एस जी आय एफ इम्पैक्ट फैक्टर -8.311

अतिथि संपादक - डॉ. सुहास मोराळे,
प्रधानाचार्य,श्री सिद्धेश्वर महाविद्यालय माजलगाव जिल्हा बीड
संपादक :- डॉ. युवराज राजाराम मुळये,
हिंदी विभाग प्रमुख तथा उपप्रधानाचार्य, श्री सिद्धेश्वर महाविद्यालय माजलगाव जिल्हा बीड
संपादक:- डॉ. गंगाधर बालन्ना उषमवार
हिंदी विभाग, श्री सिद्धेश्वर महाविद्यालय माजलगाव जिल्हा बीड

इलेक्ट्रॉनिक इंटरनॅशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल
आय एस एस एन –2277- 8721
खंड १३ , अंक १ (विशेष अंक - १)
जानेवारी- फेब्रुवारी २०२४
एस जी आय एफ इम्पैक्ट फैक्टर (SJIF)- ८.३११

सर्वाधिकार:
@ सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग और/या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता है

अस्वीकरण :
पत्रिका में व्यक्त सभी विचार व्यक्तिगत योगदानकर्ताओं के हैं। संपादक और प्रकाशक लेखकों द्वारा दिए गए बयानों या व्यक्त की गई राय के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं.

प्रकाशक :
प्रमिला ठोकले (८८५००६९२८१)
(Email Id: eiirj1111@gmail.com)

प्रकाशन:
अर्हत प्रकाशन और अर्हत जर्नल्स
158, हस्तपुष्पम बिल्डिंग, बोरा बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई,महाराष्ट्र 400001
ईमेल: aarhatpublication@gmail.com
मोबाईल- 8850069281

ISSN-2277-8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume -XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

10	स्वाधीनता आंदोलन और छायावादी काव्य प्रा. जाधव जे. बी. *10.5281/EIIRJ.10646588*	52
11	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड *10.5281/EIIRJ.10646597*	56
12	इक्कीसवी सदी की हिंदी कविताओं में दलित जीवन का चित्रण डॉ. संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर और डॉ. मुख्त्यार शेख *10.5281/EIIRJ.10646603*	60
13	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान प्रा. शफीक लतीफ चौधरी *10.5281/EIIRJ.10646623*	63
14	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य प्रा. डॉ. गजानन सवने और प्रा. डॉ. काकासाहेब गंगणे *10.5281/EIIRJ.10646650*	67
15	हिंदी सिनेमा और स्वाधीनता संग्राम प्रा. डॉ. शिवाजी वडचकर *10.5281/EIIRJ.10646658*	70
16	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों की भुमिका डॉ. अमर आनंद आलदे *10.5281/EIIRJ.10651288*	74
17	हिंदी निबंध साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे *10.5281/EIIRJ.10646680*	79
18	स्वाधीनता संग्राम में हिंदी साहित्य का योगदान डॉ. विनोद श्री राम जाधव *10.5281/EIIRJ.10646691*	84
19	प्रेमचंद के उपन्यास और भारतीय स्वतंत्रता संग्रम प्रा. व्ही.डी.कापावार *10.5281/EIIRJ.10646700*	89
20	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास प्रा. डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड *10.5281/EIIRJ.10646706*	93

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी सिनेमा और स्वाधीनता संग्राम

प्रा. डॉ. शिवाजी वडचकर

हिंदी विभाग,

कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ जि. परभणी

साहित्य समाज का दर्पण है समाज में घटित घटनाएं ,मान्यताएं, मूल्य ,मानसिकता ,परंपराएं लोक व्यावहार ,धारणाएं और मनोवृतिया साहित्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिंबित होती है । समाज में कोई भी परिवर्तन नवीनता और सुधार लाने में साहित्य एक सक्षम हथियार रहा है। इतिहास ना तो मिटाया जा सकता है, और न झुठलाया जा सकता है, पर यह तो स्पष्ट है कि समाज में वांछित परिवर्तन लाकर एक नवीन इतिहास की रचना करने में साहित्य की एक पत्र प्रदर्शन की भूमिका रही है । फ्रांस की राज्यक्रांति और रूस का बोल्सेविक क्रांति इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है । इस दृष्टि से देखे तो मानव विकास को सभी कालखंडों के समाज में आए परिवर्तन के हमें इतिहास में साक्षात दर्शन होते हैं। लेखन विकास के पूर्व भी वाचिक व गायिक रूप में यही भावनाएं मौखिक परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रही है, जो कालांतरण में साहित्य में लिपिबद्ध हुई। इतिहास खंण्डहर भले ही हो जाए पर मिटाया नहीं जा सकता। इस दृष्टि से देखे तो मानव विकास की किसी भी अवस्था का कोई भी कालखंड आदिम, गुफा व अरण्य अवस्था से आज के वैज्ञानिक अनु- परमाणु युग तक, मानव अपने समूह की स्वतंत्रता ,स्वायत्तता व अपनी भूमि की रक्षा हेतु सदैव जागरूक रहा और इस हेतु अपने प्राणों तक को न्यौछावर किया । कालांतर में समूह से विकसित राज्य व राष्ट्र की मातृभूमि की स्वतंत्रता व स्वायत्तता की रक्षा के मूल में यही मानसिकता काम करती रही । इसी पृष्ठभूमि के अंतर्गत इतिहास के दीर्घ व दुरुह कालखण्डों के विभिन्न गलियारों में न भटककर में सीधा भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर आता हूं।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

स्वतंत्रता संग्राम से यहां तात्पर्य भारत को अंग्रेजी शासन की दास्तान के जुए से मुक्त करने के संघर्ष से लिया गया है। यह स्वतंत्रता संग्राम अपने समग्र रूप में मातृभूमि को राजनीतिक रूप से स्वतंत्र करने के साथ-साथ सामाजिक, कुरीतियों, व समस्याओं से मुक्त सामंत शाही शोषण के दमन चक्र से मुक्ति ,कृषि सुधार साक्षरता, सामाजिक न्याय और समानता आदि सबको अपने में समेटे हुए था । अपने फिल्म के माध्यम से फिल्म कारों ने इन सबसे लड़ने हेतु सामाजिक क्रांति का

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I)

Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS

Original Research Article

शंखनाद करके देश की स्वतंत्रता का बिगुल बजाया । इस प्रकार एक समग्र क्रांति का अहवान किया है।

यहां पर सामाजिक क्रांति व स्वतंत्रता संग्राम दोनों एक दूसरे के पूरक के रूप में साथ-साथ चले । प्रस्तुत लेख में स्वतंत्रता संग्राम के महान यज्ञ में फिल्मों के शंखनाथ को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का यह एक लघु प्रयास है।

स्वतंत्रता संग्राम तीन चरणों में चला । प्रत्येक चरण आगे आनेवाले कालखंड के लिए वांछित वातावरण निर्माण का कार्य करता रहा, क्योंकि सबका एक ही लक्ष्य था - गोरा हटाना ,अंग्रेजों भारत छोड़ो। यह तीन चरण कालक्रम के आधार पर भले ही किए गए हो परंतु सभी चरणों का अंतिम लक्ष्य व परिणति एक ही थी कि अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता की रक्षा करना। यह चरण कालक्रम के अनुसार इस प्रकार किए जा सकते हैं।

प्रथम चरण: सन 1885 से 1924 तक के काल में मुख्य रूप से क्रांतिकारीयों का जोर रहा है। उन्होंने जन चेतना जगाने हेतु अंग्रेजों के प्रति गहरे आक्रोश व घृणा के उदगार प्रकट किए।

दूसरा चरण: सन 1924 से 1938 तक का रहा जिसमें मुख्य रूप से जन आंदोलन वह राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना के साथ ही सामाजिक कुरीतियों पर कसकर कठुराघात किया गया ।सन 1920 मैं गांधी जी द्वारा कांग्रेस की बागडोर संभालने के साथ ही खादी व ग्राम स्वावलंबन की और अधिक ध्यान दिया गया ।

तिसरा चरण: सन 1938 से1949 मे प्रजामंडलों और खुद मुखितयार गवर्नमेंट की मांग होने लगी।

इसका तात्पर्य यह नहीं की स्वतंत्रता संग्राम इन तीनों स्तरों में ही सीमित रह गया । मातृभूमि की रक्षा व स्वतंत्रता हेतु पूर्व में भी समय-समय पर सिनेमा ने शंखनाद किया । अंग्रेजो ने भारत में एक व्यापारी ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में प्रदार्पण किया । अपने व्यापार विस्तार के साथ ही शोषण व दमन का एक भयंकर कुचक्र चला कर अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित की। ' आई थी जांच मांगने और घर की मालकिन बनाकर बैठ गई ।'

कला प्रकृति का प्रतिबिंब है कला मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को कैनवास पर उतरने का काम करती है। "चित्रकला, संगीत कला, शिल्प और नाट्य कला के समान चित्रपट उनमें एक नवीन रूपाभिव्यक्ति व्यक्ति है।" यह राष्ट्रीय एकता और विश्व बंधुत्व की भावना का पोषण करता है। "चलचित्र ,कला और देश दोनों की सेवा करता है । तथा जनता तक पहुंचने वाला अच्छा माध्यम है ।" मूलत: भारतीय सिनेमा की आजादी के पहले की है सन 1931 में प्रथम सवाक् सिनेमा आलम आरा को दर्शकों ने पहली बार बड़े पर्दे पर बोलती हुई फिल्म के रूप में सुना और देखा था । इसके बाद स्वतंत्रता तक के सिनेमा का इतिहास मुख्यत: राष्ट्रीय विचारों और नैतिकतावादी दृष्टिकोण से प्रेरित था । स्वतंत्रता आंदोलन गांधीवादी विचारधारा तथा समाज में चल रहे सुधारवादी आंदोलन में एक उत्प्रेरक का काम करने की दृष्टि से इन फिल्मों का महत्वपूर्ण भूमिका रही है । "दुनिया ना माने (1937) देवदास (1931) अछूत कन्या (1936) पुकार (1939) सिकंदर (1941) आदमी (1939) पड़ोसी (1941) तथा निशा नाग (1946) जैसी प्रतिबद्ध एवं सफल फिल्मों के द्वारा धार्मिक मिथकिय एवं सामाजिक कथनों के माध्यम से अपने युग को अभिव्यक्त किया गया।"

सन 1921 में भक्ति 'विदुर' फिल्म बनाई उसमे द्वारकाधीश

ISSN-2277-8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

संपत विदुर बने थे। भक्त विदुर के शरीर पर एक धोती थी और हाथ में एक छड़ी। " ब्रिटिश सरकार ने इस वक्त विदुर को महात्मा गांधी का प्रतीक मानकर उसे पर प्रतिबंध लगा दिया। कुछ इसी तरह की घटना वंदे मातरम फिल्म के साथ भी हुई अंग्रेजों के लिए 'वंदे मातरम' शीर्षक राष्ट्रवादी चेतना को जगाने वाला था। इसीलिए इस फिल्म के शीर्षक में आश्रम शब्द जोड़कर तसल्ली पा ली गई। वही शांताराम को अपनी फिल्म 'स्वराज तोरण' के उसे दृश्य को पूरी तरह हटाना पड़ा था। जिसमें शिवाजी के सैनिक दुश्मनों से अपने किले को आजाद कराकर स्वतंत्रता ध्वज फहराते हैं ।यही फिल्म बाद में 'उदय काल' के नाम से प्रसिद्ध हुई ।"

राष्ट्रीय भावनाओं के इस दशक में आजादी' जन्मभूमि और वहां नमक चलचित्रों की पटकथाओं में प्रदर्शित किया गया। बॉम्बे टॉकीज के चलचित्र जन्म भूमि और प्रभात के वहां (बियोंड दि होराइजन) में दासता के विरुद्ध क्रांतिकारी स्वरों को सजीवता के साथ ध्वनित किया गया था और देश में युवा वर्ग के हृदय की कसमसाहट इनमें प्रकट की गई थी । यह चलचित्र उस समय देश में चल रहे स्वाधीनता संग्राम से प्रेरित होकर निर्मित किए गए थे। "अपने युग के महत्वपूर्ण चलचित्र है किंतु वास्तविक जीवन में भारतवासियों के हृदय में देश भक्ति और स्वाधीनता संग्राम के प्रति जैसा उत्साह प्रकट किया जा रहा था उसका यथार्थ प्रतिबिंब में चलचित्रों में दिखाई नहीं दिया। उनके मूल में ब्रिटिश सम्राह का तत्कालीन कठोर अंकुश ही था। जो सेंसर बोर्ड के रूप में कार्य कर रहा था ऐसा कहा जा सकता है।" सोहराव मोदी ने सन 1937 में आत्म तरंग और सन 1938 में डाइवोर्स ,जेलर और मिटा जहर फिल्में बनवा सन 1939 में जहांगीर की न्याय व्यवस्था को दर्शाने वाली फिल्म पुकार बनाई। तो सन 1941 में सिकंदर फिल्म बनाई। यह समय द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। "ब्रिटिश सरकार को सिकंदर फिल्म के प्रसंग ठीक नहीं लगे जिसमें सैनिक विद्रोह कर रहे हैं। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने फिल्म को पूरी तरह तो प्रतिबिंबित नहीं किया लेकिन छावनियों में इसके प्रदर्शन पर रोक लगा दी।" जातिवाद पर आधारित चलचित्रों में विशेष कर उन कथनों का चयन किया गया जिनमें अछुतौध्दार की समस्या को उठाया गया। छुआछुत के विरुद्ध चलाए गए महात्मा गांधी के आंदोलन का प्रभाव इन चलचित्रों के कथनों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । "महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए मद्य निषेध आंदोलन का प्रभाव ब्रांडी की बोतल चलचित्र में देखा गया।" अपना घर में देवकी बॉस ने प्रतिवादी विचारधारा को स्वर प्रदान किए थे। प्रमुख रूप से अत्याचार, हिंसा और दमन के विरुद्ध इसमें आवाज उठाई थी। इसके संवाद और गीत स्पष्ट राष्ट्रीय भावनाओं का परिचय देते हैं ।जो निम्न प्रकार है

"मिटे गुलामी,लैगे आजादी
देश का झण्डा ऊँचाकर
अपना देश हैअपना घर"

राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपनाकर कथा चित्र आए उनमें प्रभात का पड़ोसी और हम एक है तथा सेमल का फूल यह तीनों चलचित्र प्रमुख है। यह तीनों चलचित्र सांप्रदायिक भावना के विरोध में प्रस्तुत किए गए थे। प्रभात के दोनों चित्रों में हिंदू मुस्लिम एकता की भावनाओं को अत्यधिक सजीवता और मार्मिकता के साथ चित्रित किया गया था। राष्ट्रीय भावनाओं को ग्रहण करके जिन अन्य कथा चित्रों को इस दशक में प्रसिद्ध प्रदर्शित किया गया, उनमे,अपना घर, 40 करोड़

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I)

Jan – Feb 2024

Original Research Article

,नमक, अपना देश, संग्राम पहला आदमी आदि चलचित्रों का समावेश किया जा सकता है। "सन 1947 में रंजीत मूवी टोन के चलचित्र 'छीन ले आजादी' के साथ ही भारतवासियों ने अंग्रेजों के हाथ से वास्तव में आजादी छीन ली और देश स्वतंत्र हो गया इन चलचित्रों की कथाएं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति करने वाली थी।"

इस प्रकार पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि भारत के सहिंता संघर्ष में हिंदी सिनेमा का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

संदर्भ:

1. मधुमति अगस्त 2014
2. मित्तल महिंद्रा भारतीय चलचित्र पृ.1
3. मित्तल महिंद्रा भारतीय चलचित्रपृ.3
4. अग्रवाल विजय आज का सिनेमा पृ.21
5. नगर अमृतलाल संकलन एवं संपादन डॉ शरद नगर फिल्म क्षेत्र पृ.39
6. अग्रवाल विजय आज का सिनेमा पृ.108,109
7. अग्रवाल विजय आज का सिनेमा पृ.349
8. अग्रवाल विजय आज का सिनेमा पृ.353,354

Cite This Article:

प्रा. डॉ. श. वडचकर (2024). *हिंदी सिनेमा और स्वाधीनता संग्राम*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 70–73)

EIIRJ. https://doi.org/10.5281/zenodo.10646658

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

।। केल्याने होत आहे रे । आधि केलेंची पाहिजे ।।

भारतीय शिक्षण प्रसारक संस्था अंबाजोगाई संचलित

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय, माजलगांव जि.बीड

नॅक पुनर्मूल्यांकन 'बी' श्रेणी प्राप्त

तथा

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

तिथि १६ एवं १७ फरवरी, २०२४

"स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म तथा पत्रकारिता का योगदान"

-: प्रमाणपत्र :-

प्रमाणित किया जाता है कि, श्री/श्रीमती/प्रो./डॉ. वडचकर शिवाजी अप्पाराव

महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के. रमेश वरपूडकर महाविद्यालय, सोनपेठ. जि परभणी के प्रतिभागी ने

तिथि १६ एवं १७ फरवरी, २०२४ को "स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म तथा पत्रकारिता का योगदान" इस विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/सत्राध्यक्ष/विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/शोधलेख वाचक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहकर सहयोग दिया है। इस उपलक्ष्य में प्रस्तुत प्रमाणपत्र सस्नेह प्रदान किया जाता है।

शोधालेख का शीर्षक ~~कला~~ हिंदी सिनेमा और स्वाधीनता संग्राम

डॉ. युवराज मुळये	डॉ.गंगाधर उषमवार	डॉ.विनायक देशमुख	डॉ.सुहास मोराळे
उपप्रधानाचार्य,समन्वयक एवं हिंदी विभाग प्रमुख	समन्वयक हिंदी विभाग	समन्वयक अंतरिक गुणवत्ता अश्वासक प्रकोष्ठ	प्रधानाचार्य